भारतीय साहित्य संग्रह

शक्तिदायी विचार

स्वामी विवेकानन्द

शक्तिदायी विचार

Shaktidayee Vichar

by

Swami Vivekananda

स्वामी विविवेकानन्द

अनुवादक

श्री कृष्णलाल ‘हंस’

978-1-61301-242-0

2014

ई-प्रकाशक:

भारतीय साहित्य संग्रह

http://pustak.org

वक्तव्य

स्वामी विवेकानन्द कृत‘शक्तिदायी विचार’का
ई-संस्करण पाठकों के सम्मुख रखते हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक में स्वामीजी के उन चुने हुए सद्वाक्यों एवं विचारों का संग्रह है, जो उन्होंने विभिन्न विषयों पर प्रकट किये थे। ये विचार केवल किसी व्यक्ति के लिए ही लाभदायक नहीं, वरन्, समस्त राष्ट्र की उन्नति के लिए भी विशेष हितकर हैं।

ये विचार बड़े ही स्फूर्तिदायक, शक्तिशाली तथा यथार्थ मनुष्यत्व के निर्माण के निमित्त अद्वितीय पथप्रदर्शक हैं। उन लोगों के लिए, जो भारतवर्ष के आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के इच्छुक हैं, ये विचार विशेष लाभदायक होंगे।

श्री कृष्णलाल‘हंस’साहित्यरत्न के हम सभी बड़े आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक को मौलिक अंग्रेजी ग्रन्थ से सफलतापूर्वक अनुवादित किया है। हमें विश्वास है कि स्वामीजी की इस पुस्तक से हिन्दी जनता का विशेष हित होगा।

अनुक्रम

विश्वास और शक्ति
प्रेम और नि:स्वार्थता
ईश्वर और धर्म
भारत
स्फुट

विश्वास और शक्ति

- तुम प्रभु की सन्तान, अमर आनन्द के हिस्सेदार, पवित्र और पूर्ण हो। ऐ पृथ्वीनिवासी ईश्वरस्वरूप भाइयो! तुम भला पापी? मनुष्य को पापी कहना ही पाप है; यह कथन मानवस्वरूप पर एक लांछन है। ऐ सिहों, आओ और अपने तईं भेड़-बकरी होने का का भ्रम दूर कर दो। तुम अमर आत्मा,शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वभाव, शाश्वत और मंगलमय हो। तुम उसके गुलाम नहीं।
- जो अपने आपमें विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है। प्राचीन धर्मों ने कहा है, वह नास्तिक है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता। नया धर्म कहता है, वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता।
- विश्वास, विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। यदि तुम पुराण के तैंतीस करोड़ देवताओं और विदेशियों द्वारा बतलाये हुए सब देवताओं में भी विश्वास करते हो, पर यदि अपने आप में विश्वास नहीं करते, तो तुम्हारी मुक्ति नहीं हो सकती। अपने आप में विश्वास करो, उस पर स्थिर रहो और शक्तिशाली बनो।

- सफलता प्राप्त करने के लिए जबरदस्त सतत प्रयत्न और जबरदस्त इच्छा रखो। प्रयत्नशील व्यक्ति कहता है, "मैं समुद्र पी जाऊँगा, मेरी इच्छा से पर्वत टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।" इस प्रकार की शक्ति और इच्छा रखो, कड़ा परिश्रम करो, तुम अपने उद्देश्य को निश्चित पा जाओगे।

- यह एक बड़ी सचाई है; शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति - परम सुख है, अजर अमर जीवन है। कमजोरी - कभी न हटनेवाला बोझ और यन्त्रणा है; कमजोरी ही मृत्यु है।
- संसार को बस कुछ सौ साहसी स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है। उस साहस का अभ्यास करो, जिसमें सचाई जानने की हिम्मत है, जिसमें जीवन के सत्य को बतलाने की हिम्मत है, जो मृत्यु से नहीं काँपता, मृत्यु का स्वागत करता है, और मनुष्य को बतलाता है कि वह अमर आत्मा है, समस्त विश्व में कोई उसका हनन नहीं कर सकता। तब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे।
- कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है....,इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और उच्चतम आदर्शों से भर लो, उन्हें रात-दिन अपने सामने रखो; उन्हीं में से महान् कार्यों का जन्म होगा।
- संसार की क्रूरता और पापों की बात मत करो। इसी बात पर खेद करो कि तुम अभी भी क्रूरता देखने को विवश हो। इसी का तुमको दु:ख होना चाहिए कि तुम सब ओर केवल पाप देखने के लिए बाध्य हो। यदि तुम संसार की सहायता करना आवश्यक समझते हो, तो उसकी निन्दा मत करो। उसे और अधिक कमजोर मत बनाओ। पाप, दु:ख आदि सब क्या है? कुछ भी नहीं, वे कमजोरी के ही परिणाम हैं। इस प्रकार के उपदेशों से संसार दिन-प्रतिदिन